2 भाग्य और पुरुषार्थ –

• जैनेन्द्र कुमार

• गद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) एक शब्द है सूर्योदय। हम जान गये हैं कि उदय सूरज का नहीं होता। सूरज तो अपेक्षतया अपनी जगह रहता है, चलती– घूमती धरती ही है। फिर भी सूर्योदय शब्द हमको बहुत शुभ और सार्थक मालूम होता है। भाग्य को भी मैं इसी तरह मानता हूँ। वह तो विधाता का ही दूसरा नाम है। वे सर्वान्तर्यामी और सार्वकालिक रूप में है, उनका अस्त ही कब है कि उदय हो। यानी भाग्य के उदय का प्रश्न सदा हमारी अपनी अपेक्षा से है। धरती

का रुख सूरज की तरफ हो जाय, यही उसके लिए सूर्योदय है। ऐसे ही मैं मानता हूँ कि हमारा मुख सही भाग्य की तरफ हो जाय तो इसी को भाग्योदय कहना चाहिए।

अथवा भाग्य को भी मैं इसी तरह .....भाग्योदय कहना चाहिए।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'भाग्य एवं पुरुषार्थ' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' हैं।

प्रश्न- (ii) विधाता का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर - लेखक के अनुसार विधाता का दूसरा नाम 'भाग्य' है।

प्रश्न- (iii) लेखक ने भाग्योदय को किस रूप में माना है ?

उत्तर - लेखक ने भाग्योदय को सूर्योदय के रूप माना है।

प्रश्न- (iv) 'भाग्य विधाता का दूसरा नाम है' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -भाग्य विधाता का दूसरा नाम है' इस पंक्ति का आशय यह है कि भाग्य ईश्वर से पृथक् कोई चीज नहीं है, अपितु यह तो उसी का पर्यायवाची शब्द है। जिस प्रकार ईश्वर शाश्वत है, वैसे ही भाग्य भी शाश्वत है। भाग्य का न कभी उदय होता है और न अस्त होता

प्रश्न- (v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - रेखांकित अंश की व्याख्या - लेखक का कहना है कि सूर्य का उदय कभी नहीं होता है। पृथ्वी की गति के कारण हमें सूर्योदय एवं अस्त होना मालूम होता है। सूर्य सदैव अपने स्थान पर बना रहता है, केवल पृथ्वी घूमती है। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने आता है, उसी के लिए सूर्योदय

होता है। ऐसे ही जब हमारा मुख भाग्य की ओर हो जाता है तो हम कहते हैं कि भाग्योदय हो गया है।

(ख) इसलिए मैं मानता हूँ कि दुःख भगवान् का वरदान है। अहं और किसी औषध से गलता नहीं, दुःख ही भगवान् का अमृत है। वह क्षण सचमुच ही भाग्योदय का हो जाता है, अगर हम उसमें भगवान् की कृपा को पहचान लें। उस क्षण यह सरल होता है कि हम अपने से मुड़ें और भाग्य के सम्मुख हों। बस, इस सम्मुखता की देर है कि भाग्योदय हुआ रखा है। असल में उदय उसका क्या होना है, उसका आलोक तो कण-कण में व्याप्त सदा-सर्वदा है ही। उस आलोक के प्रति खुलना हमारी आँखों का हो जाय बस उसी की प्रतीक्षा है। साधना और प्रयत्न सब उतने मात्रा के लिए हैं। प्रयत्न

और पुरुषार्थ का कोई दूसरा लक्ष्य मानना बहुत बड़ी भूल करना होगा, ऐसी चेष्टा व्यर्थ सिद्ध होगी।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए ।

उत्तर - प्रस्तुत- गद्यांश के लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' हैं तथा इस गद्यांश के पाठ का नाम 'भाग्य एवं पुरुषार्थ' है।

प्रश्न- (ii) लेखक ने भगवान का वरदान किसे माना है?

उत्तर - लेखक ने 'दुःख' को भगवान का वरदान माना है।

प्रश्न- (iii) लेखक दुःख को किस रूप में मानता है?

उत्तर - लेखक दुःख को अमृत के रूप में मानता है।

प्रश्न- (iv) लेखक के अनुसार भाग्योदय कब होता है?

उत्तर – लेखक के अनुसार व्यक्ति जैसे ही अपने अहंकार और कामनाओं को त्यागकर विधाता की ओर अभिमुख होता है, उसका भाग्योदय हो जाता है।

प्रश्न- (v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – लेखक ने प्रस्तुत पंक्ति में यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य को जब तक दुःख नहीं होता तब तक वह अपने अहं अथवा स्वार्थ में डूबा रहता है। वह सब कुछ स्वयं के अनुकूल चाहता है, परंतु जब उसके जीवन में गहन दुःख उत्पन्न होता है तो वह स्वयं की स्वार्थमय दुनिया से बाहर आता है, तब उसे यह अनुभूति होती है कि वह स्वयं में कुछ भी नहीं है। तभी वह भाग्य के सामने नतमस्तक होता है और उसका पुरुषार्थ कामना रहित हो जाता है। लेखक के अनुसार दुःख को इसी कारण भगवान का वरदान मानना

चाहिए, क्योंकि यह हमें निष्काम पुरुषार्थ की ओर प्रेरित करता है और हमारी सफलता को सुनिश्चित करता है।

(ग) अकर्म का आशय कर्म का अभाव नहीं, कर्तव्य का क्षय है। 'मैं यह कर रहा हूँ, मैं वह करनेवाला हूँ, यह सब कुछ करके छोड़ूंगा' आदि-आदि, अहंकारों से किया गया कर्म, यदि सिद्धि और सफलता न लाये बल्कि बंधन और क्लेश उपजाये, तो इसमें तर्क की कोई असंगति नहीं। पुरुषार्थ का अर्थ मेहनत ही नहीं है, सहयोग भी है। अहं के बल पर चलने से यह सहयोग क्षीण होता है। तब उसका पुरुषार्थ भी क्या कहना ?

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'भाग्य और पुरुषार्थ' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'जैनेन्द्र कुमार ' हैं।

प्रश्न- (ii) अकर्म का आशय क्या है ?

उत्तर – लेखक के अनुसार अकर्म का आशय कर्म का त्याग नहीं अपितु निष्काम कर्म है अर्थात् कामना रहित कर्म ही अकर्म है।

प्रश्न- (iii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस बात का उल्लेख किया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने निष्काम कर्म एवं पुरुषार्थ का उल्लेख किया है।

प्रश्न- (iv) 'पुरुषार्थ का अर्थ मेहनत ही नहीं, सहयोग भी है।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर – "पुरुषार्थ का आशय मेहनत ही नहीं, सहयोग भी है।" लेखक के अनुसार इस पंक्ति का आशय यह है कि केवल किसी कर्म में लगे रहना ही पुरुषार्थ नहीं है। यदि ऐसा होता तो पशुओं अथवा बालकों को अधिक पुरुषार्थी

कहा जाता, क्योंकि वे भी विभिन्न क्रिया-कलापों में सक्रिय रहते हैं। वस्तुतः पुरुषार्थ का प्रमुख लक्षण यह है कि व्यक्ति परिश्रम की भावना से निरंतर प्रयास करता रहे तथा साथ ही अपनी अहंकार की भावना से विमुक्त होकर भाग्य के साथ भी सम्बद्ध हो जाय।

प्रश्न- (v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - रेखांकित अंश की व्याख्या - अकर्म से लेखक का अभिप्राय यह नहीं है कि कर्म को त्याग दिया जाए। अकर्म से लेखक का आशय यह है कि व्यक्ति के मन में इस अहंकार को समाप्त कर दिया जाए कि वह कर्म कर रहा है। इस प्रकार कर्त्ताभाव को समाप्त कर देने को ही यहाँ अकर्म कहा गया है। जब व्यक्ति यह सोचता है कि वह कर्म कर रहा है तो उसके मन में

अहंकार का भाव जाग्रत होता है। इस अहंकार के भाव को समाप्त कर देना ही सही अर्थों में 'अकर्म' है।

(घ) पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे, साथ ही सहयुक्त भी रखे। यह जो सहयोग है, सच में पुरुष और भाग्य का ही है। पुरुष अपने अहं से वियुक्त होता है, तभी भाग्य से संयुक्त होता है। लोग जब पुरुषार्थ को भाग्य से अलग और विपरीत करते हैं तो कहना चाहिए कि वे पुरुषार्थ को ही उसके अर्थ से विलग और विमुख कर देते हैं। पुरुष का अर्थ क्या पशु का ही अर्थ है? बल-विक्रम तो पशु में ज्यादा होता है। दौड़-धूप निश्चय ही पशु अधिक करता है। लेकिन यदि पुरुषार्थ पशुचेष्टा के अर्थ से कुछ भिन्न और श्रेष्ठ है तो इस अर्थ में कि वह केवल हाथ-पैर चलाना नहीं है, न क्रिया का वेग और कौशल है, बल्कि वह स्नेह और सहयोग भावना है। सूक्ष्म भाषा में

कहें तो उसकी अकर्त्तव्य भावना है। वासना से पीड़ित होकर पशु में अद्भुत पराक्रम दीख जा सकता है। किन्तु यह पुरुष के लिए ही संभव है कि वह आत्मविसर्जन में पराक्रम कर दिखाये ।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश के लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' हैं तथा इस गद्यांश के पाठ का नाम 'भाग्य एवं पुरुषार्थ' है।

प्रश्न- (ii) लेखक के अनुसार पुरुषार्थ क्या है ?

उत्तर - लेखक के अनुसार स्नेह एवं सहयोग की भावना पर आधारित प्रयास ही पुरुषार्थ कहा जाता है।

प्रश्न- (iii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस भाव को व्यक्त किया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश में लेखक द्वारा पुरुषार्थ एवं भाग्य की सापेक्षता का भाव व्यक्त किया गया है।

प्रश्न– (iv) 'पुरुष अपने अहं से वियुक्त होता है, तभी भाग्य से संयुक्त होता है।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर – प्रस्तुत कथन का आशय यह है कि जब व्यक्ति अपने अहंकार से मुक्त हो जाता है तभी भाग्य के साथ उसका मेल होता है। यही वह क्षण है, जब व्यक्ति के भाग्य का उदय होता है। पुरुषार्थ एवं भाग्य अलग-अलग भाव नहीं हैं, वरन् दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न– (v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – रेखांकित अंश की व्याख्या – लेखक के अनुसार, पुरुषार्थ का आशय केवल किसी कर्म में लगे रहना ही नहीं है। वस्तुतः इसका प्रमुख लक्षण

यह है कि व्यक्ति परिश्रम की भावना से निरंतर प्रयास करता रहे तथा साथ ही अपनी अहंकार की भावना से विमुक्त होकर भाग्य के साथ भी सम्बद्ध हो जाए। अहं भाव से विमुक्त होते ही व्यक्ति का भाग्योदय हो जाता है। और फिर वह जो प्रयास करता है, वह स्नेह और सहयोग की भावना से प्रेरित होता है। स्नेह और सहयोग की भावना पर आधारित इस प्रकार का प्रयास ही पुरुषार्थ कहा जाता है।

(ङ) इच्छायें नाना हैं और नानाविध हैं और वे उसे प्रवृत्त रखती हैं। उस प्रवृत्ति से वह रह-रहकर थक जाता है और निवृत्ति चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को अभी राग-भाव से वह चाहता है कि अगले क्षण उतने ही विराग भाव से वह उसका विनाश

चाहता है। पर राग-द्वेष की वासनाओं से अन्त में झुंझलाहट और छटपटाहट ही उसे हाथ आती है।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - (i) प्रस्तुत गद्यांश 'भाग्य और पुरुषार्थ' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर - रेखांकित अंश की व्याख्या- मनुष्य असीमित इच्छाओं के चक्रव्यूह में फँसकर निवृत्त होने के लिए धर्म की ओर प्रेरित होता है। वह मोह-माया का त्याग करके जब ईश्वर की आराधना में लीन होना चाहता है तब उसके मन में त्याग और वैराग्य का भाव पैदा होता है। इन दोनों स्थितियों में ही मानव मन एकाग्रचित्त नहीं हो पाता है। कभी तो वह इस संसार में राग-

भाव से आराधना करता है तो दूसरे ही पल वह वैराग्य भाव से प्रेरित होकर इस संसार के विनाश के विषय में सोचने लगता है, परिणामस्वरूप उसे झुंझलाहट व छटपटाहट का आभास होता है।

प्रश्न- (iii) प्रवृत्ति - निवृत्ति के चक्र में फँसा मनुष्य क्यों थक जाता है ?

उत्तर - मनुष्य का अनंत इच्छाओं के प्रति अपनी प्रवृत्ति और निवृत्ति के द्वन्द्व से थक जाता है।

प्रश्न- (iv) प्रेम और ईर्ष्या की वासनाओं में पड़कर व्यक्ति की स्थिति कैसे हो जाती है?

उत्तर - प्रेम और ईर्ष्या की वासनाओं में पड़कर व्यक्ति को झुंझलाहट और छटपटाहट होती है।

प्रश्न- (v) कौन-सा द्वन्द्व व्यक्ति को थका देता है?

उत्तर - प्रवृत्ति और निवृत्ति का द्वन्द्व व्यक्ति को थका देता है।

(च) दुनिया में हम देखते तो हैं कि बहुत हाथ-पैर पटक रहे हैं, दिन-रात जोड़-तोड़ में लगे रहते हैं। कोशिश में तो कमी नहीं है, पर सिद्धि कुछ नहीं मिल पाती। तो आखिर ऐसा क्यों है? कोशिश की पुरुषार्थ में सिद्धि मानें तो यह दृश्य नहीं दीखना चाहिए कि हाथ-पैर पटकने वाले लोग व्यर्थ और निष्फल रह जाएँ। अगर वे व्यर्थ प्रयास करते रहते हैं तो अंत में यह कह उठे कि क्या करें, भाग्य ही उल्टा है, तो इसमें गलती नहीं मानी जायेगी।

प्रश्न- (i) उपयुक्त अवतरण का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर – संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश 'भाग्य और पुरुषार्थ' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' हैं।

प्रश्न– (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर – रेखांकित अंश की व्याख्या – लेखक का कहना है कि संसार में कुछ मनुष्य अत्यधिक कर्मठ होते हुए भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाते, तब मनुष्य कहने लगता है कि हमारा तो भाग्य ही खराब है अर्थात् प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है। जबकि वास्तविकता यह होती है कि उस व्यक्ति के कर्म करने का तरीका नहीं है।

प्रश्न– (iii) व्यक्ति भाग्य पर दोष कब मढ़ते हैं और अपनी गलती नहीं मानते ?

उत्तर – व्यक्ति भाग्य पर उस समय दोष मढ़ता है जब कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिलती है।

प्रश्न- (iv) कोशिश और पुरुषार्थ में क्या अन्तर है?

उत्तर - कोशिश का अर्थ है - किसी वस्तु की प्राप्ति हेतु प्रयास करना, जबकि पुरुषार्थ का अर्थ है किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए रात-दिन अथक परिश्रम करना और निरन्तर उसी के बारे में चिन्तन करना।

प्रश्न- (v) संसार में सिद्धि प्राप्त करने हेतु लोग क्या-क्या करते हैं ?

उत्तर - संसार में सिद्धि प्राप्त करने के लिए निरन्तर पूरे तन-मन से काम करते रहते हैं।

(छ) भाग्य के प्रति अभ्यंतर में अर्पित होकर पुरुष जो भी पुरुषार्थ करता है, वह उसे उत्तरोत्तर मुक्त और समग्र ही करता जाता है भाग्य के प्रति अवज्ञा रखना अपने से शेष के प्रति अवज्ञाशील होने के बराबर है। इसे बुद्धि के प्रमाद का ही लक्षण मानना चाहिए।

प्रश्न- (i) पुरुष मुक्त और समग्र कब होता है?

उत्तर - जब मनुष्य भाग्य के प्रति अर्पित होकर पुरुषार्थ करता है तो उसका पुरुषार्थ फल की इच्छा से रहित हो जाता है और तब वह दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली एवं बन्धन विहीन हो जाता है।

प्रश्न- (ii) भाग्य के प्रति अवज्ञा रखना किसके बराबर है ?

उत्तर - पुरुषार्थ को मान्यता देकर भाग्य की अवहेलना करने का आशय अपनी शक्ति के अहंकार में डूबने से है।

प्रश्न- (iii) भाग्य के प्रति अवज्ञा रखना किस लक्षण को व्यक्त करता है?

उत्तर - भाग्य के प्रति अवज्ञा रखना सम्पूर्ण सृष्टि को नकारना है।

प्रश्न- (iv) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – भाग्य की अवहेलना करने का अभिप्राय अपनी शक्ति के अहंकार में डूबकर अपने अतिरिक्त, शेष सम्पूर्ण सृष्टि को नकारना है।

प्रश्न– (v) पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर – पाठ का शीर्षक 'भाग्य और पुरुषार्थ' है और इसके लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं।

(झ) अर्थ हमारा स्वार्थ बन जाएगा, पुरुषार्थ वह नहीं कहलायेगा अगर भाग्य के परमार्थ से उसे हम नहीं जोड़ सकेंगे। उस स्वार्थ के जो चक्र में है, वे भाग्योदय की प्रतीक्षा में रहे ही चले जा सकते हैं। क्योंकि जिसके उदय की वे राह देखते हैं वह तो उदित है ही, केवल उनकी पीठ उस तरफ है। इसलिए उन्हें मालूम नहीं है कि जिसको वे सामने देख रहे हैं वह भी उसी के प्रकाश से प्रकाशित है और कमनीय जान पड़ रहा है।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर - (i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक भाग्य और पुरुषार्थ है जिसके लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं।

प्रश्न- (ii) पुरुषार्थ क्या नहीं कहलाएगा?

उत्तर - यदि हम भाग्य के परमार्थ से नहीं जोड़ सकेंगे तो वह पुरुषार्थ नहीं कहलायेगा ।

प्रश्न- (iii) कौन भाग्योदय की प्रतीक्षा में रहे ही चले जा सकते हैं?

उत्तर - जो स्वार्थ के चक्र में डूबे हुए हैं, वे भाग्योदय की प्रतीक्षा में ही रह जाते हैं।

प्रश्न- (iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - जिसे आप सामने देख रहे हैं वे भी इसी पुरुषार्थ का आश्रय लेकर सुशोभित एवं कमनीय लग रहे हैं।

प्रश्न- (v) 'पुरुषार्थ' तथा 'परामर्श' शब्द का अर्थ लिखिए।

उत्तर - पुरुषार्थ – परिश्रमी, क्रियाशील

परामर्श - सलाह, मशविरा